

अथवा

अति मलीन वृशभानु-कुमारी
हरि सम-जल भीज्यौ उन-अंचलए तिहिँ लालच न धुवावति सारि ॥
अध मुख रहति अनत नहिँ चितवति, ज्यौं गथ हारे थकित जुवारी ।
छूटे चिकुर बदन कुम्हिलाने, ज्यौं नलिनी हिमकर की मारी ॥
हरि सँदेस सुनि सहज मृतक भइ, इक बिरहिनि, दूजे अलि जारी ।
सूरदास कैसैं करि जीवैं ब्रज बनिता बिन स्याम दुखारी ॥

(भाव सौंदर्य)

(ख) काहे ही नलनी तू कुम्हिलानीं,

तेरे ही नालि सरोवर पानीं ॥टेक॥
जल मैं उतपति जल मैं बास, जल मैं नलनीं तोर निवास ।
ना तलि तपति न ऊपरी आगि, तोर हेतु कहु कासनि लागि ।
कहै कबीर जे उदिक समान, ते नहीं मूए हमारे जान ॥

(प्रतीकात्मकता)

अथवा

चकवा चकवी दो जने उनको मारे न कोय ।
ईह मारे करतार कै रैन बिछोही होय ॥
सेज सूनी देख के रोऊं दिन-रैन ।
पिया पिया कहती मैं पल भर सुख न चौन ॥

(रहस्य भावना)

13/12/18 (M)

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 7456

IC

Unique Paper Code : 12051102

Name of the Paper : हिंदी कविता (आदिकालीन एवं भक्तिकालीन काव्य)

Name of the Course : B.A. (Hons.) Hindi – CBCS

Semester : I

Duration : 3 Hours

Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।
 2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं ।
1. हिंदी साहित्य में अमीर खुसरो के योगदान पर प्रकाश डालिए ।

अथवा

विद्यापति 'भक्त कवि हैं या शृंगारी' ? विचार कीजिए । (12)

2. कबीर की भाषा पर प्रकाश डालिए ।

अथवा

'मधुमालती' में वर्णित प्रेम व्यंजना पर प्रकाश डालिए । (12)

3. 'मीरा की उपासना 'माधुर्य' भाव की थी' - इस कथन के आधार पर मीरा की भक्ति की विशेषताएँ लिखिए।

अथवा

सूरदास की भक्ति-भावना पर प्रकाश डालिए। (12)

4. तुलसीदास की समन्वय भावना को स्पष्ट कीजिए।

अथवा

तुलसीदास की काव्य-कला पर विचार कीजिए। (12)

5. सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

(क) कबीर कर पकरैं अंगुरी गिनैं, मन धावै चहुं वोर ।
जाहि फिरायां हरि मिलै, सो भया काठ कठोर ॥
कबीर केसौ कहा बिगाड़िया, जे मूडै सौ बार ।
मन कौ काहे न मूडिए, जा मैं बिशै बिकार ॥

अथवा

नांक सरूप न बरनै पारौं । तीनिउं भुवन हेरि कै हारौं ।
कीर ठोर औ खरग कै धारा । तिलक फूल मैं बरनि न पारा ।
उदयागिरि जौ कहौं तौ नाहीं । ससि सूरज दुइ बाद कराहीं ।
निकट न कोउअ संचरै पारा । निसि दिन जियै सो बास अधारा ।
केहि दै जोर पटतरौं नासा । ससि सूरज जेहि करहिं बतासा ।

नांक, सरूप सोहागिनि केहि लै लावौं भाउ ।

जा कहं ससि सूरज निसि बासर ओसारीं सारहिं बाउ। (8)

- (ख) ऐसो को उदार जग माहीं ।

बिनु सेवा जो द्रवै दीनपर राम सरिस कोउ नाहीं ॥
जो गति जोग बराग जतन करि नहिं पावत मुनि ग्यानी ।
सो गति देत गीध सबरी कहँ प्रभु न बहुत जिय जानी ॥
जो संपति दस सीस अरप करि रावन सिव पहुँ लीन्हीं ।
सो संपदा बिभीशन कहँ अति सकुच-सहित हरि दीन्हीं ॥
तुलसीदास सब भाँति सकल सुख जो चाहसि मन मेरो ।
तौ भजु राम, काम सब पूरन करैं कृपानिधि तेरो ॥

अथवा

धूत कहौ, अवधूत कहौ, राजपूत कहौ, जोलहा कहौ कोऊ ।
काहूकी बेटीसों बेटा न ब्याहब, काहूकी जाति बिगार न सोऊ ।
तुलसी सरनाम गुलामु है रामको, जाको रुचौ सो कहै कछु ओऊ ।
माँगि कै खैबो, मसीतको सोइबो, लैबोको एकु न दैबोको दोऊ ॥ (7)

6. निम्नलिखित पद्यांशों में दिए गए निर्देश के अनुसार किन्हीं दो का रचना कौशल विश्लेषित कीजिए : (6×2=12)

(क) हेरी म्हा तो दरद दिवाणाँ म्हारौं दरद न जाण्यौं कोय ।।टेक।।
घायल रो गत घायल जाण्यौं, हिबड़ो अगण सँजोय ।
जौहर की गत जौहरी जाण्यौं, क्या जाण्यौं जिण खोय ।
दरद को मारयां दर दर डोल्याँ वैद मिल्या णा कोय ।
मीरौं री प्रभु पीर मिटाँगा जब वैद साँवरो होय ॥ (प्रेम की पीर)